

लक्षण किं श्रीपापूज ॥ वलि ॥ ॥ प्रयागादि ॥ वलि ॥ कुरुकादिपूजनं ॥ वलि ॥
 अथ प्राणादिपूजनं ॥ वलि ॥ ॥ इति स्वतंत्रं वीरपूजा ॥ ॥ अथ कीमती गणपूजा
 विधिलिखितं ॥ पीतवासनं ध्याया ॥ मधुमयं दूधं वा कृत्वा चतुर्गुणं ध्यायात् ॥ वलिपी
 तं नैवेद्यं पुण्या ॥ ध्यानं कथय ॥ कल्पितार्थं पञ्चपुतापं अद्वयं उज्जमका
 यदुम ॥ श्री सोनकाय ॥ ॥ ततः पूजनं ॥ मृगयार्थं ॥ अथादि ॥ यजमानमिति
 ॥ मुनूतमकथं ॥ त्वासा ॥ जलाद्यैर्गुणपूजा ॥ रुद्रशुद्धि ॥ आत्मपूजा ॥ आवोरुत
 ॥ पञ्चवलि ॥ विवलि ॥ नवात्मो वृत्तमर्तुर्ल ॥ आसनं ॥ यजुर्ल ॥ विष्णुल ॥ आनि
 मूला ॥ नैवृषासनं ॥ अंजलिं हासनं पापूज ॥ अथात्र वज्रवकिणी ॥ वलि मूलन ॥

धूपदीपजापस्तोत्रं ॥ श्रीमद्वरु ॥ अणुगन्धदि ॥ ॥ धनं सिद्धयुक्तं त्रिगुणं
 वदन्नालखानं ॥ अथ मूलमण्डपं जपयथाव ॥ अथ १०० विद्यावत्कीमतीर्त
 कायकृष्णं वाजनं शिवाय ॥ अथ द्वातालखानं ॥ कीमतीमायाभा
 कृत्वा ॥ कथनं श्रुता ॥ अथ धूनकावत्कीमतीमायाभा ॥ कथनं विष्णुवत्कुरु
 ॥ देवावसर्तमाया ॥ अथ काविनीन ॥ इति सिद्धय ॥ वलिनपि यधूनकाव ॥ नि
 म्बुनयाय ॥ मगदं तालवा ॥ सुगुणनवाय ॥ वन्दनं सिद्धयुक्तं वत्कुरु
 क ॥ यथावत्सर्वक ॥ अथ आरतिपुतिषु ॥ कलनया लखनकाय ॥ लख
 अथ मदीर्तयनं ॥ आरतिपुतिमंगलायुक्तं यथा ॥ वासनं नवाय वायुय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नैज कौटुहलयादि न्यास ॥ पूर्वविदागक ॥ स्नानतर्पण ॥ नैज आश्रादादि ॥ नैज प
 तासनाय पापूज ॥ आन ॥ नैज नीली मृगमंकागं ॥ कवकं दिलावनी ॥ विगय
 पिगकं गं चरव ॥ ४ ॥ क ॥ विनी ॥ येता नृमहादेव ॥ अथ नैज गपालक ॥ आनय
 र्था ॥ २ ॥ अथ कौटुहलयादि ॥ गुण ॥ लि ॥ नैज कौटुहलयादि ॥ नैज गपालायाय पापूज ॥ ३ ॥ वलि ॥ नैज
 कौटुहलयादि ॥ पूजन ॥ वलि ॥ दधुमूदा ॥ धूप दीपा ॥ ज्ञाप ॥ अथ ॥ निवर्णनि
 विहल ॥ अथ ग ॥ अदि ॥ ॥ ॥ ति ॥ ग ॥ पूजा ॥ ॥ अथ व ॥ ग ॥ पूजा ॥ नैज वां कूट
 यादि न्यास ॥ पूर्वविदागक ॥ स्नानतर्पण ॥ आसन आश्रादादि ॥ नैज रुसासन अया
 पू ॥ आन ॥ नैज मरु रुसासनी देवी पीतवस्त्रविभूषिता ॥ विन्दुमूदाय प्रसाद ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 अथ विन्दुमूदाय ॥ आनय ॥ पापूज ॥ गुण ॥ लि ॥ नैज वैवी वं वं ॥ वस्त्राय नैज पापूज
 ॥ ३ ॥ वलि ॥ नैज अथात्र अमाद्य वन्द विमल जीवस्त्रायणी वि ॥ अयाय पूज ॥ नैज वां
 कूटयादि पूजन ॥ वलि ॥ धूप मूदा ॥ धूप दीपा ॥ नैज वै ॥ २ ॥ अथ ॥ वस्त्रायणी रुम
 मातृरायीताक्षायीतवासिनी ॥ प्रसाद ॥ विन्दुमूदाय वस्त्रायणीय नमः ॥ अथ ॥ अथ
 ग ॥ अदि ॥ ॥ ॥ ति ॥ व ॥ पूजा ॥ ॥ अथ मा ॥ अथ ॥ पूजन ॥ नैज मां कूटयादि न्यास ॥
 पूर्वविदागक ॥ स्नानतर्पण ॥ नैज आश्रादादि ॥ आसन ॥ नैज वृषासन पापू ॥ आन ॥
 नैज मरु वृषरुमातृरायीतवासिनी ॥ प्रसाद ॥ विन्दुमूदाय वृषायीतवासिनी ॥
 आनय ॥ पापूज ॥ गुण ॥ लि ॥ नैज मी मी मूं मूं ॥ श्रीमहादेव ॥ अथ नमः ॥ पापूज ॥ ३ ॥ नववलि ॥
 कनक ॥ गव

जे अथवा अथमा धव वरद विमल के माह ध्वनी विश्व या पू॥ वलि॥ जे माह दयादि ८ पू
 नी॥ वलि॥ विष्णु लमडा॥ धूप दीप जापा॥ अथ॥ जे माह ध्वनी दृष्टा वृत्ताङ्गी स्वतवास
 सी॥ गूला कविन्द मूडा वरु की दवीन मासाद॥ अथ ग॥ अदि॥ ॐ ति माह ध्वनी पूजा॥ ॥
 अथ॥ कोमादी पूजन॥ जे अ॥ काह दयादि न्यास॥ पूर्व विदोग क॥ जे अ॥ कौं कौं कूँ
 कूँ आग क॥ खान गै न॥ जे अ॥ आधा रादि ८ आसन॥ जे अ॥ मयूरा मनाये पापू॥
 वृ॥ ॥ अ॥ न॥ जे अ॥ महामयूरा मयूरा वरु वरु विरु वरु॥ ग॥ क॥ कविन्द मूडा
 वरु रूत कोमा त्रिकारु॥ अ॥ न॥ पृष्ठी पापू॥ आवा रुनादि॥ अ॥ अ॥ लि॥ जे अ॥ वरु
 कौं कौं कूँ कूँ रूत कोमा दी दवी पापू॥ ३॥ वलि॥ जे अ॥ अथवा अथमा धव वरद वि

क्याउहेनव

॥ जे अथवा अथमा धव वरद विमल के माह ध्वनी विश्व या पू॥ वलि॥ जे माह दयादि ८ पू

मल चं कोमादी विश्व या पू॥ जे अ॥ वाह दयादि पूजन॥ वलि॥ ग॥ कि मूडा॥ धूप
 दीप जापा॥ जे अ॥ कोमादी मयूरा वृत्ताङ्गी वरु वरु वरु॥ ग॥ क॥ कविन्द मू
 डा वरु अथवा वरु नमाऽ सुते॥ अथ ग॥ अदि॥ ॐ ति कोमादी पूजा॥ ॥ तथा
 वृत्ती पूजन॥ जे अ॥ वाह दयादि न्यास॥ पूर्व विदोग क॥ खान गै न॥ जे अ॥ आधा रा
 दि ८ आसन॥ जे अ॥ गवृत्ता मनाये पापू॥ अ॥ न॥ मीरा ताक समा वृत्ता स्याम व
 रु विरु वरु॥ विन्द कापा रूत रूत रूत रूत॥ अ॥ धृता रूत॥ अ॥ न॥ पृष्ठी पापू॥
 अ॥ अ॥ लि॥ जे अ॥ वां वी वृ वृ॥ धी वरु वरु दी दवी पापू॥ ३॥ वलि॥ जे अ॥ अथवा अथमा ध

क्याउहेनव

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यी० दध्याकध्या ॥

॥ यथैकनगोय

॥ सिद्धिलक्ष्मी

॥ कुसुमगीर्ध

॥ खेतसिखी तेख

॥ यथा नष्टवृद्ध

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

॥ यालिगण धरुध

॥ लक्ष्मी नन्द्या

॥ दध्याकध्या ॥

११५ ज्योमारी या गोले धि

ASHA ARCHIVES 3314

श्रीतीर्थनक्षत्र

३५ श्री महाशिवाय नमः ३

यो वा मल्लोदयो या पू॥३॥ एवंबलि॥ नेज अथात्र अमाद्यववद विमलयं वा म
 ल्लो विजया पू॥ बलि॥ वा हृदयादि॥ यं वलं वं वा मल्लो यं वलिं शुद्धं रत्नादा॥
 काश्च मूडा॥ धूपदीपजापौ॥ म॥ शु॥ नेज वा मल्लो यं तमा मूडा वका॥ शुद्धं शुद्धं वृषिणी
 ॥ ठम वृद्धं शुद्धं रुद्राय विन्दु मूडा नमाऽस्तु॥ अष्टग श्रीदि॥ ॐ नमो वा मल्लो पूजा॥
 ॥ तता मल्लालम्बी पूजनं॥ नेज मां हृदयादि न्यासो॥ आवाहन पूर्ववत्॥ स्नान गंगा
 नेज आक्षत्रादि॥ नेज सिद्धा मनाये या पू॥ नेज सिद्धासन गता लम्बी कंकमा वृषा वि
 युदा॥ विन्दु मूडा विगुला कंधूता माय पत्रश्री॥ श्रीन पृष्ठा या पू॥ शुद्धं लि॥ नेज
 मां मे मूं मे मूं श्रीमल्लालम्बी दिव्यो या पूजा॥ ३॥ एवंबलि॥ नेज अथात्र अमाद्यववद

गंसीदात्रसत्रद

विमलमं मङ्गलं श्रीविष्णुपापूजा॥ वलि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥
वलिगुरुकृष्णारु॥ खड्गमुखा॥ धृपदीपजाया॥ म० २॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥
लाकविन्दुधारादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ ॥ काठिलि सगणपतिपूजनं॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥
॥ श्रीवाराहपूजार्चनं॥ खानगर्जनं॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥
जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥
पं॥ श्रीनृपुष्पाया॥ गुणलि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥
वलि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥ जैजगद्दयादि॥

पञ्चायमाली ॥ गजवदनमहानामासप्ययस्त्रायवीत पृथगतजघनातुलितक
 स्वमूर्ति । कवयुगजयमालो मूललङ्कणव रवदुविद्येवन्दमसिम्भगल्ल
 ॥ अङ्गमक्षदि ॥ ॐ तिगल्लमपुजा ॥ ॥ तति काठिलियुजनी ॥ वेदका नैजवा
 रुदयादिन्यास ॥ आवाहनादिपूर्ववत् ॥ स्नानगर्भ ॥ नैजजोभावादि ॥ नैजमयवा
 सनपापू ॥ क्षान्त ॥ नैजदण्डरुसंक्रमवत् ॥ वक्रवर्णसूतजसं । बालयस्त्रायवी
 तिवक्ष्येद्विद्युपमदृक् ॥ क्षान्तपृष्ठापापू ॥ शुक्ललि ॥ नैजवैवीवैवेदकनाथ
 ययापू ॥ ३ ॥ नववलि ॥ नैजवांरुदयादि ॥ नैजवावेदकनाथयवलि ॥ रुद्रेश्वराला
 ॥ भूपदीपजाप ॥ धीश ॥ मण ॥ वक्रवर्णमिहागजदण्डरुसंमहावलि ॥ जिलि

नागदावववदृकसंनमाम्यहं ॥ अङ्गमक्षदि ॥ ॐ तिकाठिलियुजनी ॥ ॥ धर्म
 धनकाव लिहोडायोडा आगिनीवालिसंशुलित ॥ भूपदीपजापमाली ॥ अङ्ग
 मक्षदि ॥ ॥ धर्मधनकावलपभलाय ॥ मकुतिथं सकलगतल्लिभद्रयक
 ॥ खजमंगललक्षवसे पाणजवसजानकं ॥ धनज्वावायनोविन्दुविय ॥
 नैजपीतिष्ठतासनसु रुवरुयद्वरल्लभवका मनुमूर्तिवर्णीवर्णीसनाथप
 लितरुनिरुनाले कपालागल्लो यक्रावक्रासद्वयोपिष्ठागल्लमहितामात
 वक्ष्यगपालो आगिन्यायगयुक्ता धनजलखवका पानभंगलिप्सुगोपिवदु
 दवगा ॥ सर्वसिद्धाध्विनीयको । आगिनीकपालाचममदरुयवसिगा ॥

अविनाशक रवदहा जज वामन वणम वचन आगम क रयना सिना ज श्री सु
 खसंपद ॥ ॥ धर्म धन दौ वहा पक्क ॥ भाय वल मसक गुपुथ ॥ मालनी ॥ पी
 ० वगात्रा ॥ महामाया ॥ विष्णु ॥ विवरो मनु ॥ यथे ग कि ॥ अगम भ्रादि ॥
 भाय गत दाव समय भ ॥ तप लियाय ॥ आवाय नि ॥ नैन नन्द न कल था नि
 न्या नन्द नु कुल पुग का ॥ नन्द नु श्री कला चा य थिया न्य कल दी कि गो ॥ ॥
 भावाय क ॥ धय धाय ॥ र्थ काठिन मुख धु द्वि ना सूय का वन के ॥ मधु कृपि दि ध
 व विय ॥ र्थ वर गि क्लाया ॥ दलु थि ज वन अन क ॥ खडान र निवा ज्ञान क ॥ दक्षिण
 र वाम भ ॥ र्थ दि वि द्व वर ॥ के दि वि लि वर ॥ कलि हा वि श्राव क ॥ थय क र्ण क स

कृप ॥ नडा ल पूजा आलन लीयु सङ्गु ॥ दण्डि वलि मूल सङ्गु ॥ ॥ ५
 भधन दाव सुक्कि क स र्थ काठिन र्थन ॥ कल ग या ल खन ॥ अति शव का विय ॥
 वन्दने सिन्दु रे भो रनी सगुण ॥ आनि खा विय ॥ मरु अय गिय ति व ॥ की मा री
 ग म समर्य भोज याय ॥ ॥ ०० ति की मा री या ग वि वि ४ समा र्थ ॥ ७ र्ण ॥
 सम ग २० ॥ दण्डि कृष्ण ॥ ल का दे री ॥ अ ग व वा द कृष्ण का मा त्रियू ज्ञा डा ॥
 पि थ पूजा आवा या र नी ७३ र्ण र्ण र्ण ॥ ॥ १० पूजा कल दाव श्रु
 लि स ॥ र व व स लि त न ॥ तय माल र्ण ॥ धर्म वि ण व र्ण ॥ ७ र्ण म नु ॥

[illegible]

॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]